कक्षा १० वी ssc

पाठ १,२,३,४ पढ़े।

व्याकरण :हिंदी मानक वर्तनी, विकारी और अविकारी शब्द के भेद और उदाहरण लिखिये।

निबंध लिखिये: १) विज्ञान के चमत्कार २) रेल्वे स्टेशन पर २ घंटे

निबंध के कुछ उदाहरण

(१) विज्ञान के चमत्कार

''कर देता हर मुश्किल आसान,
यदि सफल-सुफल हो विज्ञान।''

आज का युग विज्ञान का युग है। तरह-तरह की वैज्ञानिक खोजों ने मनुष्य के जीवन में क्रांति ला दी है। आज मनुष्य विज्ञानरूपी घोड़े पर सवार होकर नित्य नए चमत्कार करता जा रहा है।

सर्वप्रथम हम घरेलू जिंदगी का उदाहरण देख सकते हैं। एक समय था, जब घर में मिट्टी का दीया जुगनू की तरह चमकता था, लेकिन आज बिजली की करामात से रात में क्रिकेट मैच खेला जा रहा है। वातानुकूलित कमरे में सुख की नींद सो पाते हैं। वैज्ञानिक उपकरणों की खोज से हमारी जिंदगी आरामदायक बन गई है।

यातायात के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देकर विज्ञान ने हमारी यातायात की समस्या हल कर दी है। अपनी सुविधा के अनुसार हम मोटरों, रेलगाड़ियों, वायुयानों या जलयानों के माध्यम से अपने इच्छित स्थान पर सुगमता से आ-जा सकते हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में वैज्ञानिक चमत्कारों ने सभी को चमत्कृत कर दिया है। भयंकर बीमारियों का इलाज खोज लिया गया है। आज अंधे को आँख मिल सकती है तथा जरूरत पड़ने पर शरीर के अंग-प्रत्यंग भी बदले जा सकते हैं। एक्स-रे, सोनोग्राफी, तथा सीटी स्कैन के द्‌वारा शरीर के भीतरी भागों की जाँच-पड़ताल और इलाज संभव हो गया है। चेचक, हैजा, मलेरिया, टायफाइड, टी.बी. तथा कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ भी अब इलाज के दायरे में हैं।

मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान की देन महत्त्वपूर्ण है। रेडियो, दूरदर्शन, कंप्यूटर, सी. डी. प्लेयर से हमारा भरपूर मनोरंजन होता है। सिनेमा तो विज्ञान की अनुपम देन है। मनोरंजन के इन साधनों से जनता को आनंद की प्राप्ति हो रही है।

कृषि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने ऐसे उपकरणों का निर्माण किया है, जिनकी सहायता से कृषिकार्य कठिन नहीं रहा। पहले किसानों को खेतों में अथक मेहनत करनी पड़ती थी, लेकिन आज विज्ञान की मदद से ट्रैक्टर, पंपिग सेट, ट्यूबवेल, थ्रेशर तथा अन्य मशीनों का आविष्कार हो गया है। इनकी सहायता से किसान भाई अपना कृषि-कार्य आसानी से कर रहे हैं। खाद एवं संकरित बीजों से उत्पादन बढ़ा रहे हैं, कीटनाशकों से फसलों को बचा पाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। मुद्रण-यंत्र के निर्माण से शिक्षा के प्रचार-प्रसार में काफी सहायता मिल रही है। आजकल कंप्यूटर के माध्यम से शिक्षा का कार्य बड़ी सुगमता से संपन्न हो रहा है। अनेक विषयों की पढ़ाई कंप्यूटर के द्‌वारा की जा सकती है। इंटरनेट की सुविधा से विभिन्न विषयों से संबंधित कोई भी जानकारी पलभर में प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार कंप्यूटर ने ज्ञान-विज्ञान का पिटारा खोल दिया है।

विज्ञान ने कई प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का भी आविष्कार किया है, जिससे व्यक्ति तथा राष्ट्र की सुरक्षा हो रही है। हालाँकि इसके दुरुपयोग से मानव जीवन की क्षति तो होती है, लेकिन फिर भी समय की माँग के अनुसार विज्ञान ने कई प्रकार के घातक अस्त्रों का भी निर्माण किया है, जिनसे देश की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

समाचार तथा संदेश भेजने में भी विज्ञान ने अपने चमत्कार दिखाए हैं। टेलिफोन, मोबाइल फोन, फैक्स, वायरलेस तथा सैटेलाइट संचार-व्यवस्था से कोई भी जानकारी कुछ ही पलों में सारे विश्व में दी जा सकती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि -

''दुनिया में एक अजूबा, आया ज्ञान अनूठा!
नई उम्मीदें - नए चमत्कार!! किया कल्पना को साकार!!
करो विज्ञान की जय-जयकार!!!''

(२) रेलवे स्टेशन पर दो घंटे

यात्रा जीवन का एक सुखद अंग है। इसी संदर्भ में एक शायर ने भी कहा है -

सैर कर दुनिया की गाफिल
जिंदगानी फिर कहाँ...

मुझे यात्रा करना बहुत ही अच्छा लगता है। मैं ग्रीष्मकालीन अवकाश का उपयोग यात्रा के लिए ही करता हूँ। इस साल की छुट्टियों में मैंने अपने दोस्तों के साथ दिल्ली जाने की योजना बनाई। हम गाड़ी छूटने के दो घंटे पूर्व रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए।

स्टेशन पहुँचने पर मैंने देखा कि लोग टैक्सियों, कारों और रिक्शा से उतरकर स्टेशन में प्रवेश कर रहे थे। कुछ यात्रियों के सामान लाल वर्दी वाले कुली उठाकर चल रहे थे; तो कुछ लोग स्वयं ही अपना सामान ढो रहे थे।

टिकट खिड़की पर यात्रियों की लंबी कतारें थीं। सभी को टिकट जल्दी मिलने की उत्सुकता थी। हम भी टिकट लेकर प्लेटफॉर्म पर पहुँचे। प्लेटफॉर्म पर अलग-अलग धर्म, जाति, भाषा और वेषभूषा वाले लोग दिखाई दिए। कुछ लोगों के चेहरों पर परेशानी के भाव भी दिखाई दे रहे थे।

वहाँ ठंडे पानी के नलों पर लंबी कतारें थीं। हर यात्री रास्ते में पीने के लिए अपनी बोतलें भर लेना चाहता था। मैं भी अपनी बोतल लेकर कतार में खड़ा हो गया। काफी देर तक खड़े रहने के बाद मेरा नंबर आया और मैंने भी अपना पानी भर लिया।

खाने-पीने के सामान के स्टालों व बुकस्टॉलों पर भी लोगों की काफी भीड़ थी। खिलौनों के स्टॉलों पर बच्चों की भीड़ लगी हुई थी। हर व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुएँ खरीद रहा था। चाय और समोसे बेचनेवाले तो लोगों के पास आ-आकर 'चाय गरम' और 'चटपटे समोसे' की आवाज़ लगा रहे थे।

उसी समय एक रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ पहुँची। अब लोगों में खलबली मच गई। यह नागपुर जाने वाली गाड़ी थी। लोग अपना-अपना सामान लेकर डिब्बों में घुसने लगे। खूब धक्कम-धक्का मचा। डिब्बे के कुछ यात्रियों में तो 'तू-तू मैं-मैं' हो रही थी। कई यात्रियों व कुलियों में मजदूरी को लेकर कहा-सुनी हुई। सामान की ठेलाठेली में कई यात्री घायल होते-होते बचे।

गाड़ी छूटने के पहले का दृश्य तो बहुत ही मजेदार था। कहीं जाने की खुशी थी, तो कहीं बिछुड़ने का गम। स्टेशन पर आए विदा करने वाले लोग अपने-अपने स्वजनों को संभल कर जाने की हिदायत दे रहे थे। कोई पहुँचने पर फोन करने की तो कोई पत्र लिखने की बात कर रहा था। कोई 'शुभयात्रा' तो कोई 'बाय-बाय' कहकर विदा कर रहा था।

इतने में दिल्ली जानेवाली हमारी गाड़ी भी प्लेटफॉर्म पर आ पहुँची। हम सभी लोग डिब्बे में जाकर अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए।

पत्र लिखिये

बधाई-पत्र

(१) विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण होने पर अपने मित्र को एक बधाई-पत्र लिखिए।

दिनांक - २७ अप्रैल, २०१८

प्रिय अजय,

मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र नीरज का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष दसवीं कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

अजय! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करे तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुनः बधाई के साथ।

तुम्हारा मित्र,

दिनकर

नाम - अजय

पता - अशोक नगर,

वी.पी. रोड,

नाशिक - ०२।

ई-मेल आईडी - ajay123@gmail.com

(२) ३३१-ए, विजय नगर, जबलपुर के अलोक गुप्ता के मित्र सुधांशु को पदोन्नति मिली है। इस पर आधारित बधाई-पत्र लिखिए।

दिनांक - २२ अप्रैल, २०१८

प्रिय मित्र सुधांशु,

सप्रेम नमस्कार!

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर जो हार्दिक प्रसन्नता हुई उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। प्रिय सुधांशु! तुम्हें डी.एस.पी. से एस.पी. बना दिया गया है। सच में यह खुशी का समाचार है। तुमने जिन हालातों में संघर्ष करते हुए आई.ए.एस. की परीक्षा पास की थी, उसी से मुझे विश्वास था कि तुम निरंतर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ोगे। यह सब तुम्हारी मेहनत और तपस्या का ही फल है।

अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। परमपिता परमात्मा से सदा यही प्रार्थना है कि तुम जीवन में इसी तरह सफलता प्राप्त करते रहों। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। भाभी जी को नमस्ते कहना। बच्चों को ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा मित्र,

आलोक

नाम - आलोक गुप्ता

पता - ३३१-ए, विजय नगर,
जबलपुर।

ई-मेल आईडी - vijay123@gmail.com